

अंक 2 15 अगस्त, 2018



स्टाफ क्लब सीएसआईआर- हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान पालमपुर, हिमाचल प्रदेश, भारत।

मंथन

स्टाफ क्लब, सी.एस.आई.आर.- आई. एच. बी. टी., पालमपुर

वर्ष 12 अंक 2

15 अगस्त, 2018

<u>आमुख</u>

आपके स्टाफ क्लब की पित्रका "मंथन" का इस वर्ष का दूसरा अंक आपके समकक्ष प्रस्तुत है। आपके अन्दर विद्यमान वे प्रतिभायें, जिन्हें आप बोल कर या अन्य किसी रूप में व्यक्त नहीं कर सकते आप उन्हें मंथन के माध्यम से लघुलेख, कथा, कलाकृति, रेखाचित्र, कविता या अन्य किसी भी रूप में व्यक्त कर सकते हैं तथा छिपी प्रतिभा को निखार सकते हैं।

"मंथन की भावना है-भावनाओं का मंथन"

स्टाफ क्लब के सभी सदस्यों एवं उनके परिजनों से निवेदन है कि वे मंथन के आगामी अंकों के लिए प्रविष्टियां देने की कृपा करें ताकि मंथन का अगला अंक समय से निकला जा सके। भाषा हिन्दी या अंग्रेजी हो सकती हैं।

इस अंक में प्रविष्टियां देने वालों एवं सहयोग प्रदान करने वालों का स्टाफ क्लब की ओर से धन्यवाद।

राकेश कुमार सूद एंव मुखत्यार सिंह

संपादक

संकलन: सौरभ शर्मा

विषय सूची

वर्ष 12	अंक 2	15 अगस्त,	2018
>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>			
Sr.No. Title		Author F	Page
>>>>>>>>>>>	>>>>>>>>	>>>>>>>>>>>	>>>>
1. पढ़ाई कैसे करें		धर्मेश	4
2. मोबाईल फोन		धर्मेश	5
3. हमारा प्यारा सी एस आई		शुभम गुलेरिया	6
4. स्वतंत्रता दिवस की पुकार	₹	अटल बिहारी वाजपेयी	7
5. आई.एच.बी.टी. परिवार के	बच्चों की कृतियाँ		
6.		Anushka	8
7.		Avantika	9
8.		Deepanshu Gain	10
9.		Devangana Gain	11
10.		Ghritashi Nadda	12
11.		Ghritashi Nadda	13
12.		Harishini	14
13.		Harishini	15
14.		Ridhima	16
15.		Sucheta Roy	17
16.		Tavish Bisht	18
17.		Tavish Bisht	19
18.		Trisha	20
19.		Vaishnavi Purohit	21
20.		Arayan Verma	22
21.		Vivek Das	23
22.		Samir	24
23.		Soumil	25
24.		Ani	26

||| पढ़ाई कैसे करें |||

करो पढ़ाई शांत चित एवं एकाग्र होकर। यदि हो कोई व्यवधान तो पढ़ो बोल बोल कर। बनाओ समय सरणी विषयों का करो वर्गीकरण| कठिन को दो समय ज्यादा और आसन को कम। कभी न पढ़ो लेटकर पढ़ो हमेसा कुर्सी पर बैठ कर| प्रशन याद करो समझ कर जो रटने से है बेहतर। लें हमेशा पौष्टिक आहार, मगर अल्पाहार| परीक्षा है निकट सब पढ़ना होगा मुस्किल| नोट्स बनाकर पढ़ोगे, तो हो जाओगे सफल| करो तैयारी लगाकर मन, कोर्स हो गया ख़तम। करो याद लिख कर, खेलने का समय कर दो कम। रहो हमेसा खुश, दो परीक्षा तनाव मुक्त होकर। यदि ऐसे करोगे पढ़ाई, तो होगा परिणाम बेहतर। होगी खूब वाह-वाही, मिलेगी खाने को मिठाई।

धर्मेश

||| मोबाईल फोन |||

मोबाईल फोन की रिंगटोन जब बजती है। दिल में एक हल चल सी होती तो दौड़े-दौड़े जाते, मोबाईल फोन उठाते हैं| देखकर काल प्रियजन की हो जाते प्रभ्लित। करते बात हैं और भूल जाते प्रभ् की स्त्ति। वाट्सऐप, फेसब्क की इसने ऐसी लत है लगाई| बार-बार देखते हैं इसको कितने लाइक आई| मुँह बनाकर सेल्फी खींचते करते स्टेटस अपडेट| अब तो मोबाईल पर ही होती है सभी जनों से भेंट। माँ-बाप दूर हो गए और दूर हो गए सारे रिश्तेदार। मोबाईल ऐसे हो गया जैसे पहला पहला प्यार। यदि किया जाये उपयोग सही तभी है ये बेहतर। इसका तो होता है दुरपयोग ज्यादातर। उपयोग करो जितना हो जरूरी। उतना बनाओ इसको तुम अपनी कमजोरी। नहीं लिए तो यारों कहते हैं कवि धर्मेश, इसी सँभल जाओ वक्त रहते अन्यथा हो जायेगा क्लेश|

धर्मेश

||| हमारा प्यारा सी. एस. आई. आर. |||

सीः एसः आईः आरः हमारा प्यारा है। औद्योगिकी और अनुसंधान का पिटारा है। वैज्ञानिक जहाँ करते दिन रात काम हैं।

और जहाँ के तकनीकी अधिकारी करते उपकरणों से धमाल हैं।

पेपर पेटेंट और तकनीकों की भरमार है। इन्क्बेटीस जहाँ अपना भाग्य बनाते हैं। और किसान अपनी आय बढ़ाते हैं।

चल पड़ा है हमारा सी॰ एस॰ आई॰ आर॰ एक नयी दिशा की और।

लिए उम्मीद और आशा की नयी डोर।

3ठो सी॰ एस॰ आई॰ आर॰ के शोधकर्ताओं
हमारी आवाम ने हमे पुकारा है।

शुभम गुलेरिया

||| स्वतंत्रता दिवस की पुकार |||

पंद्रह अगस्त का दिन कहता-आजादी अभी अध्री है। सपने सच होने बाकी है, रावी की शपथ न पूरी है।।

> जिनकी लाशों पर पग धर कर आज़ादी भारत में आई। वे अब तक खानाबदोश गम की काली बदली छाई।।

कलकत्ते के फुटपाथों पर, जो आँधी पानी सहते है। उनसे पूछों, पंद्रह अगस्त के बारे में क्या कहते है।।

> हिन्दू के नाते उनका दुःख सुनते यदि तुम्हें लाज आती। तो सीमा के उस पार चलो, सभ्यता जहाँ कुचली जाती।।

इंसान जहाँ बेचा जाता, ईमान ख़रीदा जाता है। इस्लाम सिसकियाँ भरता है, डालर मन में मुस्काता है।।

> भूखों कों गोली नंगों कों हथियार पिन्हाये जाते हैं। सूखें कंठों से जिहादी नारे लगवाये जाते हैं।।

लाहौर, कराची ढाका पर मातम की है काली छाया। पख्तूनों पर, गिलगित पर है गमगीन गुलामी का साया।।

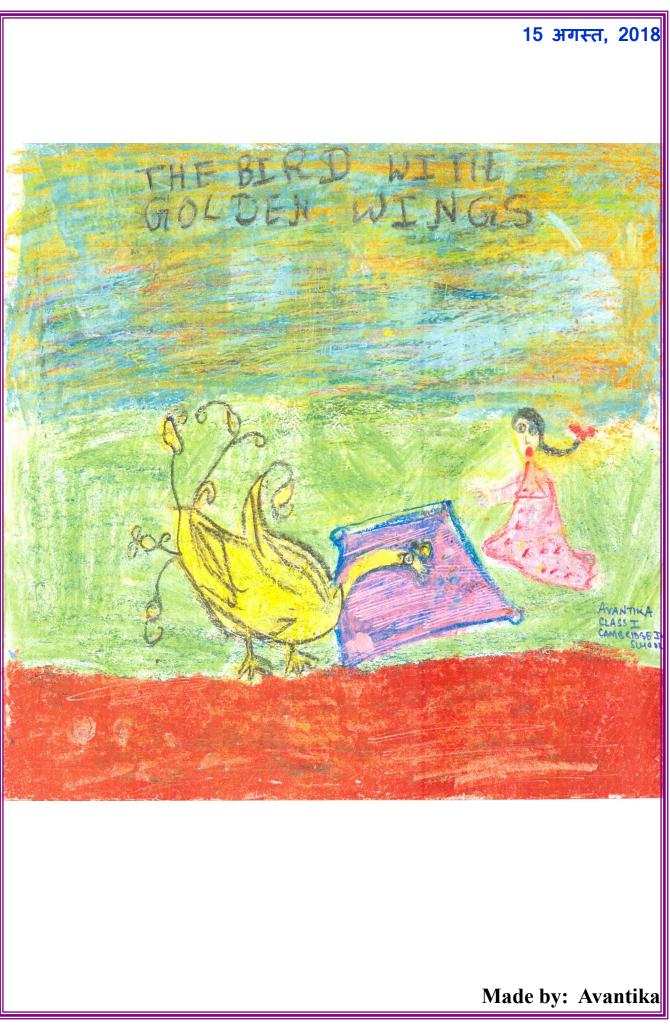
> बस इसीलिए तो कहता हूँ आज़ादी अभी अधूरी है। कैसे उल्लास मनाऊँ मैं ? थोड़े दिन की मज़बूरी है।।

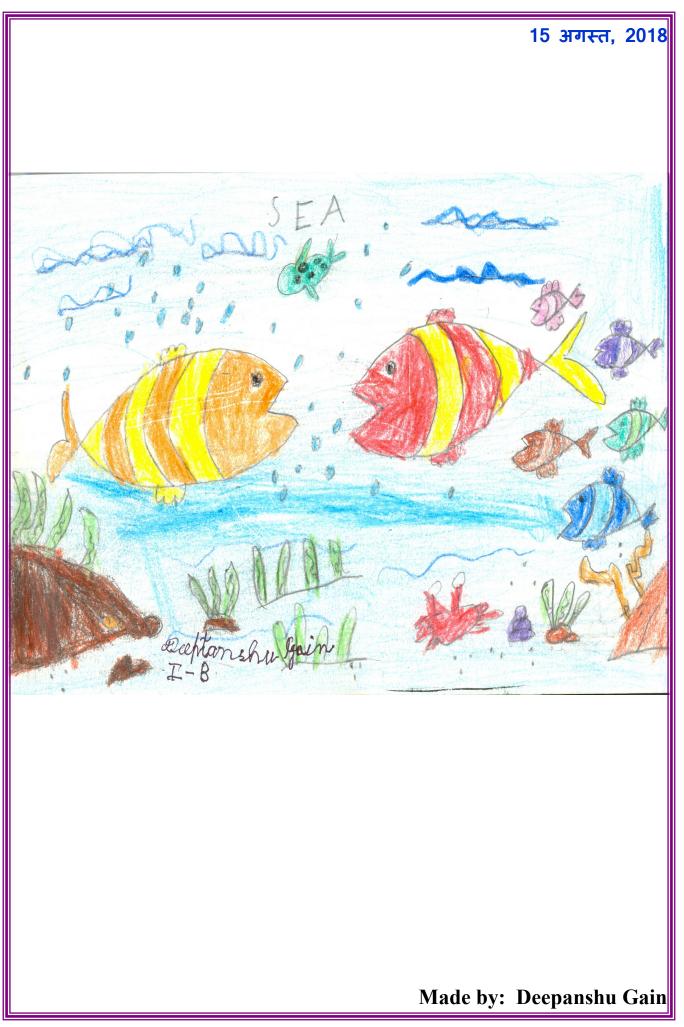
दिन दूर नहीं खंडित भारत कों, पुनः अखंड बनाएंगे। गिलगित के गारो पर्वत तक आज़ादी पर्व मनायेंगे।।

> उस स्वर्ण दिवस के लिए आज से कमर कसें बलिदान करें। जो पाया उसमें खो ना जायें जो खोया उसका ध्यान करें।।

> > संदर्भ: अटल बिहारी वाजपेयी : मेरी इम्यावन कविताएँ. चिन्द्रिकाप्रसाद शर्मा, नई दिल्ली किताबघर, 2012, पृष्ट: 49







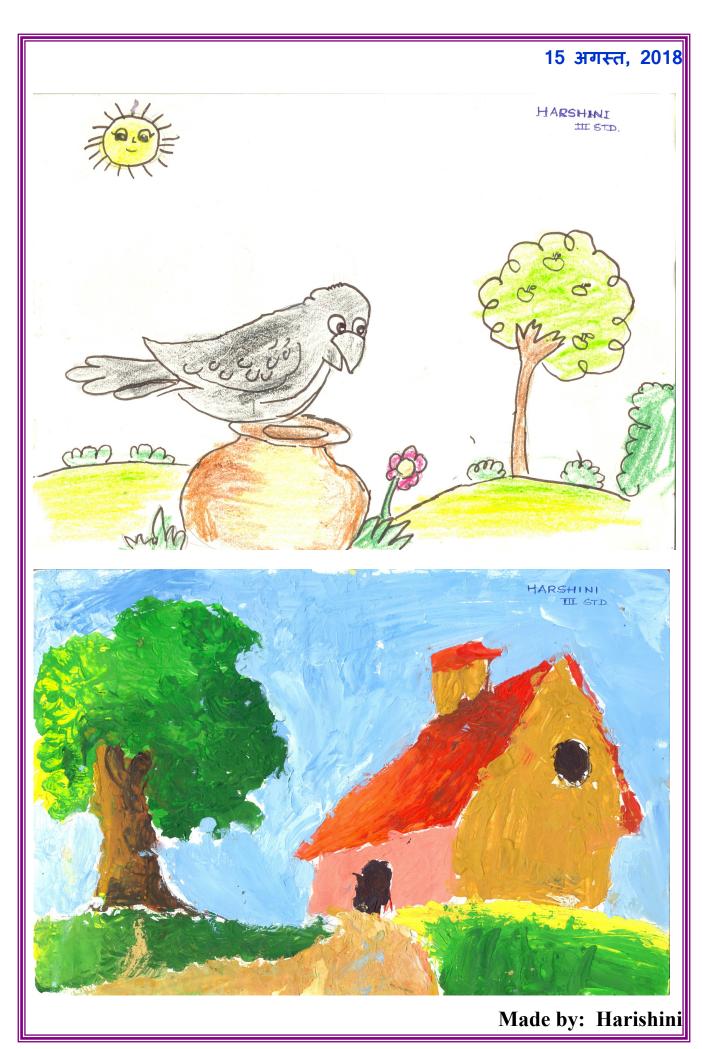


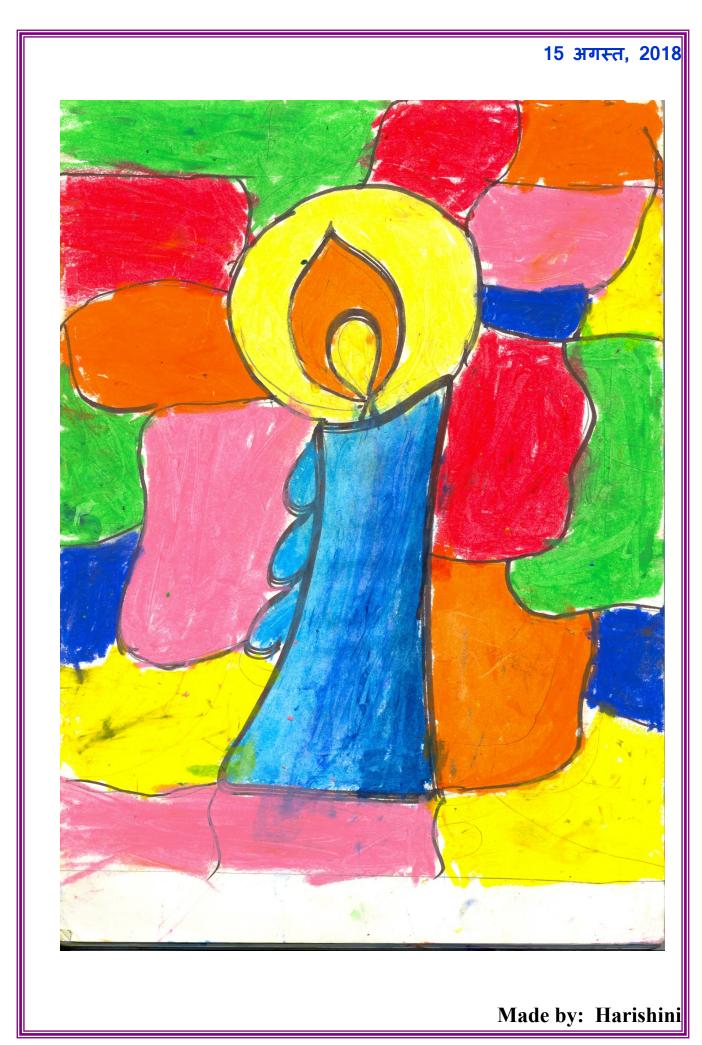


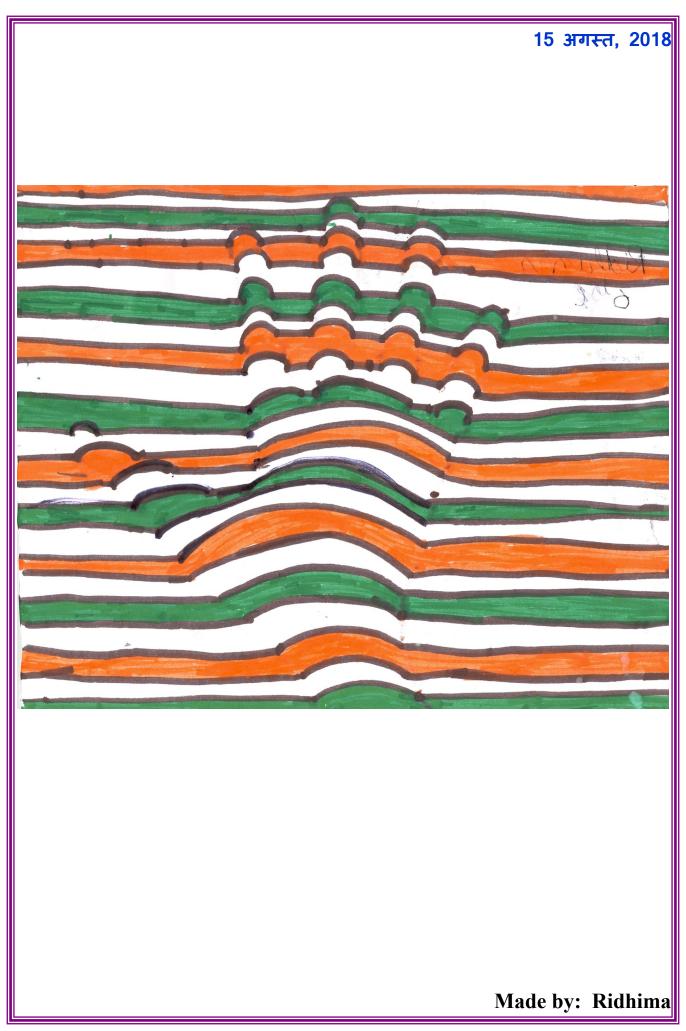
Made by: Ghritashi Nadda



Made by: Ghritashi Nadda

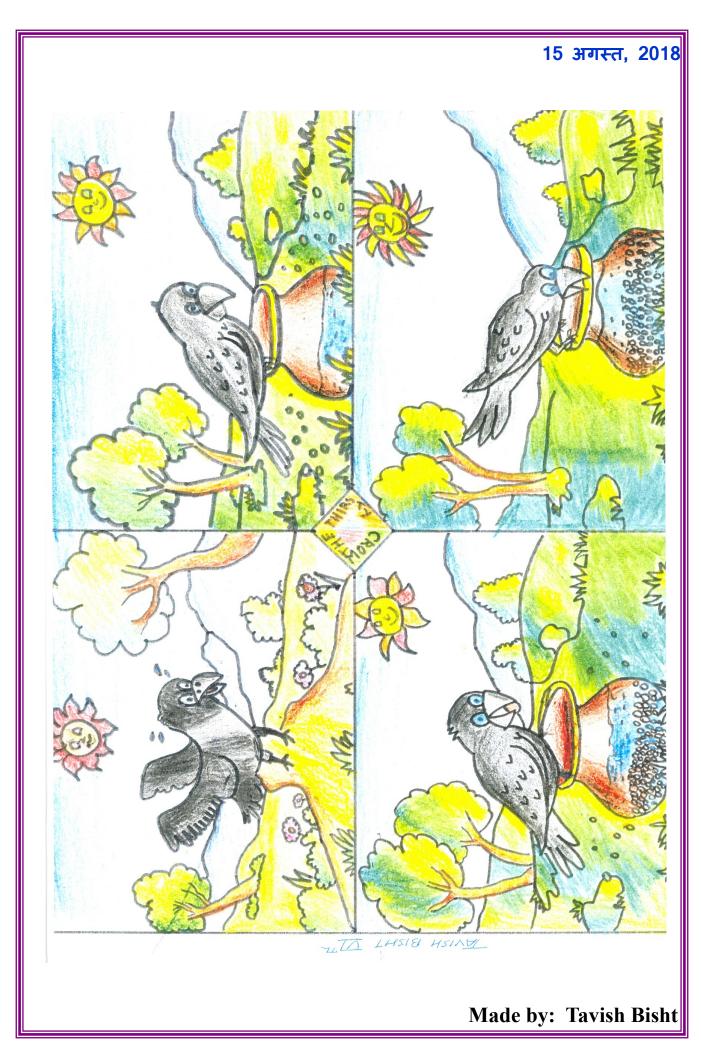








Made by: Sucheta Roy







Made by: Trisha





Made by: Aryan Verma



Made by: Vivek Das







Made by: Ani